© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 05 , Issue : 03 | January – March 2018

गोस्वामी तुलसीदास की रचनाओं में समन्वयवाद

डॉ. राकेश कुमारी (Lecturer in Hindi),GGSSS. Barwala Pkl. (Haryana

ISSN : 2348-5612 © URR

गोस्वामी तुलसीदास एक महान् भक्त, प्रबुद्ध कवि, समन्वयवादी लोकनायक, समाज सुधारक, उपदेशक एवं तत्व द्रष्टा दार्शनिक थे। वे एक प्रबुद्ध विचारक एवं तत्व चिन्तक महापुरुष थे। तुलसी हिन्दी के उन महान् कवियों में अग्रगण्य है, जिनके काव्य का मूल उददेश्य 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' है। वे कविता का मूल उददेश्य लोकमंगल का विधान करना मानते है। तभी वे 'रामचरितमानस' में लिखते हैः

''कीरति भनिति भूति भलसोई।
सुरसरि सम सब कहं हित होई ।।'

तुलसी का सम्पूर्ण काव्य लोकमंगल का विधान करने वाला हिन्दी साहित्य का सर्वश्रेष्ठ काव्य है। तुलसी भारतीय जनता के प्रतिनिध कवि कहे जा सकते है। वे समाज की एकता व कल्याण के लिए विभिन्न धर्मो विविध मतों, अनेक मान्यताओं व रीति–रिवाजों में समन्वय की स्थापना करके लोकमंगल करना चाहते थे।

तुलसीदास का प्रादुर्भाव ऐसे काल में हुआ जब समाज, धर्म, राजनीति परिवार आदि सभी क्षेत्रों में विषमता, विभेद वैमनस्य व्याप्त था। ऐसे विषम वातावरण में तुलसी जैसे महापुरुष की आवश्यकता थी, जो समन्वय के माध्यम से लोकमंगल का विधान कर सके। उन्होंने अपने तत्कालीन परिस्थितियों को देखकर यह जान लिया कि जब तक हिन्दू समाज में सभी प्रकार का समन्वय नहीं होगा। तब तक उस समाज का कल्याण असम्भव है। राम भक्त कवियों की एक उल्लेखनीय विशेषता है इनकी समन्वयवादी प्रवृति। तुलसी के समय में धर्म के क्षेत्र में हिन्दू और मुस्लिम मतों में संघर्ष है तो हिन्दू धर्म में शैव वैष्णव धर्मों के बीच विषमता व द्वेष। समाज की दशा तो बहुत विषैली थी। हिन्दू समाज भी ब्राह्मण व शूद्री के बीच छूआछूत की भावना के कारण बँटा हुआ था। बुद्वदेव समन्वयकारी थे। गीता में समन्वय की चेष्टा की गयी है। तुलसी भी एक समन्वयवादी कवि थे।

राजा और प्रजा में एकता नहीं थी। इस प्रकार समाज के प्रत्येक क्षेत्र की विकृत दशा को देखकर तुलसी ने पहली बार समाज मनोविज्ञान को भली–भांति पहचान कर अपने युग के समस्त विरोधी तत्वों का विरोध कर एवं समाज के विकृत स्वरूप का परिष्कार करके जन समाज के सभी क्षेत्रों में समन्वय की भावना को मूर्त रूप दिया। और सच्चे लोक धर्म की स्थापना की।

तुलसी से पूर्व संत कवियों ने सारे भारत में भावात्मक एकता स्थापित करने का प्रयास किया उन्होंने अपने गहन चिन्तन और व्यक्तित्व के अनुरूप समन्वय किया। तुलसी एक सच्चे लोकनायक थे जिन्होंने समाज के विघटन को रोकने का भरसक प्रयास किया और समाज को एक सूत्र में पिरोने की चेष्टा की। इसी कारण तुलसी की प्रशंसा करते हुए आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने उन्हें बुद्धदेव के बाद भारत का सबसे बड़ा लोकनायक मानते हुए कहा है–''लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय कर सके। तुलसी का सम्पूर्ण काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है।''

समन्वय का अभिप्राय है–दो या अधिक विरोधी विचारधारों का विरोध दूर करके, पारस्परिक भेदभाव को मिटाकर समरसता उत्पन्न करना।

तुलसीदास ने अपने सम्पूर्ण काव्य में हर दृष्टि से समन्वयवादी प्रवृति को अपनाते हुए मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया है। उन्होंने अपने काव्य में शैव और वैष्णव का समन्वय, ज्ञान और भक्ति का समन्वय, सगुण और निर्गुण का समन्वय, राजा और प्रजा का समन्वय, नर और नारायण का समन्वय साहित्यिक क्षेत्र में समन्वय, भाग्य और पुरुषार्थ का समन्वय, विभिन्न वर्णों में समन्वय

पारिवारिक समन्वय आदि का समन्वय किया। रामचरितमानस में उन्होंने राम के मर्यादित चरित्र का ही वर्णन किया। क्योंकि उनको विश्वास था कि मर्यादित जीवन की हमारी समस्त सामाजिक एवं धार्मिक साधनाओं की सफलता का प्रमाण हो सकता है।

तुलसी जी ने अपने काव्य में शैव और वैष्णव का समन्वय किया। भारतीय सनातन धर्म में मुख्यतः त्रिदेव ब्रह्म, विष्णु व शिव की आराधना की जाती है। विष्णु के भक्त वैष्णव तथा शिव के भक्त शैव कहलाते है। तुलसी के तत्कालीन समय में वैष्णव और शैव में वैमनस्या इतना बढ़ा हुआ था कि वे एक–दूसरे के आराध्य देव को द्वेय और तुच्छ बताते थे। वे दोनों पक्ष एक–दूसरे के इष्ट का नाम तक नहीं लेते थे। ऐसे समय में तुलसी ने रामचरितमानस में तुलसी ने रामकथा से पहले शिवकथा का वर्णन करके दोनों में समन्वय किया। तुलसी ने राम और शिव में अभेद मानते हुए कहा है।

"हरिहर पद रति मति न कुतरकी।"

तुलसी ने शिव को राम का उपासक दिखाकर शिव से यह कहलवायाः–

सोई मम इष्ट देव रघुवीरा।
सेवत जाहि सदा मुनि धीरा।।

रामचरितमानस के लंकाकाण्ड में राम भगवान शिव को अपना अराध्य मानकर रामेश्वरम में उनकी स्थापना करते है और कहते हैः–

सिव द्रोही ममदास कहावा।
सो नर मोहि सपनेंहु नहीं भावा।।
संकर प्रिय भम द्रोही सिव द्रोही मम दास।
ते नर करहिं कलप भरि धोर नरक मह बास।।

तुलसी का मत है कि केवल शंकर या केवल राम–राम की भक्ति करने वाला तथा दूसरे से द्रोह करने वाला सच्चा ईश्वर भक्त नहीं है। इस प्रकार राम को शिव का अनन्य भक्त सिद्ध करते हुए तुलसी ने शैव और वैष्णव मतों का अनूठा समन्वय किया है। विनय पत्रिका में भी तुलसी ने सभी देवी–देवताओं की स्तूति की है। उनका विश्वास है कि सभी धार्मिक मत एक ही लक्ष्य की प्राप्ति के विभिन्न सोपान है।

तुलसी से पूर्व सभी मतों व सम्प्रदायों में इस बात पर भी संघर्ष चल रहा था कि ईश्वर सगुण है या निर्गुण। कबीर आदि अनेक भक्त कवि निर्गुणोपासक थे। वे ईश्वर को निर्गुण निराकार, अजन्मा, अविनाशी एवं सर्वव्यापी मानते थे। दूसरी तरफ सगुणोपासक सूरदास आदि अनेक भक्त कवि सगुन की उपासना कर रहे थे। कबीर ने अपने काव्य में अवतारवाद का खण्डन किया है। उधर सूरदास ने भ्रमरगीत प्रसंग में ईश्वर को सगुन साकार मानते हुए गोपियों द्वारा निर्गुण का खण्डन करवाते है। ऐसी स्थिति में तुलसीदास ने अपने काव्य में सगुण और निर्गुण के प्रश्न पर व्याप्त विद्वेष एवं वैमनस्य को दूर करते हुए उन दोनों में समन्वय का प्रयास किया। रामचरितमानस ने तुलसी ने राम और ब्रह्म की एकता निरूपित करते हुए कहा हैः–

अमल, अनवघ, अद्वैत निर्गुण सगुण ब्रह्म
सुभिराम नर भूप रूप।

तुलसी के राम निर्गुण और निराकार ब्रह्म के ही सगुन साकार रूप है

अगुण सगुण दुई ब्रह्म सरूपा।
अकथ अगाध अनादि अनूपा।।

तुलसी का मानना है कि जब–जब संसार में अधर्म बढ़ता है तथा असुर एवं अभिमानी बढ़ जाते है, तब–तब वे प्रभु कृपा करके अवतार लेते है और सज्जनों के कष्ट का हरण करते है

जब–जब होइ धरम कै हानी।
बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी।।
तब–तब प्रभु धरि विविध सरीरा।

हरहि कृपा निधि सज्जन पीरा।।

तुलसी कहते कि वह ब्रह्म दयालु दानबन्धु करणावत्सल भक्तवत्सल है, वह भक्तों के प्रेम के वशीभूत होकर वही निर्गुण ब्रह्म सगुण साकार हो जाता है। बालकाण्ड में लिखते है।

अगुनहि सगुनहिं नहीं कुछ भेदा।
गावहि मुनि पुरान बुध वेदा।।
अगुन अरूप अलख अज सोई।
भगत प्रेम बस सगुण सो होई।।

इस प्रकार तुलसीदास ने अपने काव्य में निर्गुण और सगुण ईश्वर में समन्वय स्थापित करने का स्तुत्य प्रयास किया।

तुलसी से पूर्व भारतीय साधना में यह विवाद चल रहा था कि ईश्वर को प्राप्त करने के लिए कौन–सा मार्ग श्रेष्ठ है– ज्ञानमार्ग या भक्तिमार्ग। निर्गुण ब्रह्म को मानने वाले ज्ञान मार्ग और भक्तजन भक्ति को श्रेष्ठ मानते थे। ऐसे समय में तुलसी ने रामचरितमानस में ज्ञान और भक्ति का समन्वय किया। उन्होंने ज्ञान और भक्ति के क्षेत्र में जो अन्तर था उसे खत्म करते हुए दोनों को भगवान की प्राप्ति का साधनसिद्ध कहा–

भगतिहिं यानहिं नहीं कुछ भेदा।
उभय हरहि भव सम्भव खेदा।।

उन्होंने प्रतिपादित किया है कि भक्ति और ज्ञान दोनों ही सांसारिक कष्टों से मुक्ति दिलाने में समर्थ है। उत्तरकाण्ड में निरूपित ज्ञान भक्ति प्रसंग में तुलसी ने ज्ञान को दीपक तथा भक्ति को मणि माना है।

राम भगति चिंतामनि सुंदर ।

उन्होंने ज्ञान मार्ग को तलवार की धार के समान पैना माना है ग्यान पंथ कृपान के धारा।

तुलसी ने मेल ही भक्ति मार्ग की सरलता एवं श्रेष्ठता प्रतिपादित की हो, परन्तु वे अन्य सगुण कवियों की भांति ज्ञान की न तो खिल्ली उड़ाते है और न ही उसे व्यर्थ बताते है। उनके अनुसार भक्ति ज्ञान और वैराग्य से युक्त होकर शोभा पाती है।

कहहिं भगति भगवंत के संजुत ग्यान विराग। तुलसीदास ने वेदों का अध्ययन किया था तभी तो उन्होंने ज्ञान और भक्ति का समन्वय अपने काव्य में किया है।

तुलसी के समय में अनेक धार्मिक मत एवं दार्शनिक विचारधारा प्रचलित थे जिनमें परस्पर विरोध व्याप्त था। तुलसी ने इन सभी विरोधों को दूर करके अपनी समन्वयवादी दृष्टि का परिचय दिया। उन्होंने रामचरितमानस तथा विनयपत्रिका में अपने दार्शनिक विचारों का अध्ययन किया है। तुलसी से पूर्व सभी सगुण विचारकों ने शंकर द्वारा प्रतिपादित अेद्वतवाद का खण्डन किया था परन्तु तुलसीदास ने रामचरितमानस के आरम्भ में मंगलाचरण के अंन्तर्गत पंचदेव की स्तुति करके शंकराचार्य की परम्परा का निर्वाह किया है। मूल रूप में तुलसीदास रामनुजाचार्य के विशिष्ट द्वैतवाद एवं विशिष्टाद्वैतवाद में समन्वय स्थापित करने का भरसक प्रयास किया। विनय पत्रिका में तुलसी ने शंकराचार्य के अद्वैतवाद के अनुरूप ही ब्रह्म को अज, सर्वज्ञ सत्य माना।

अनध, अद्वैत, अनवध, अव्यक्त अज, अमित अविकार आनन्द सिन्धो।

उन्होंने जगत और जीव को मिथ्या निरूपित करते हुए अद्वैतवादी विचारधारा का समर्थन किया है। तुलसी के माया सम्बंधी विचार भी अद्वैतवाद के अनुरूप ही है। उन्होंने विशिष्टाद्वैतवाद का अनुसरण करते हुए मानस, में अभिव्यक्त किया हैः–

ईश्वर अंसजीव अविनासी।
चेतन, अमल सहज सुख रासी।।

तुलसी ने जगत को शून्य में निर्मित चित्र मानते हुए कहा हैः–

कोउ कह सत्य झूठ कहि कोऊ जुगल प्रबल कोउ मानै।

तुलसीदास परिहरै तीनि भ्रम सो आपन पहिचानै।।

तुलसी जगत के वर्तमान रूप को मिथ्या ही मानते है, तो इस द्वैताद्वैत के चक्र को भी भ्रम ही मानते है। इस प्रकार दार्शनिक क्षेत्र में व्याप्त विशण्डनवाद को दूर कर तुलसी सभी विचारधाराओं का समन्वय करने का प्रयास करते दिखाई देते है।

तुलसी के समय देश में मुसलमानों का शासन था। उनके काल में राजा और प्रजा को ईश्वर के रूप में देखती थी। राजा अपने कर्तव्य का भली–भांति पालन नहीं करता था। प्रजा अनेक कष्टों को झेल रही थी। तुलसीदास ने अपने काव्य में कलियुग का वर्णन किया है। एक तरफ उन्होंने अपने काव्य में कलियुग के राजा और प्रजा का वर्णन किया है तो दूसरी और राजा को उनके कर्तव्यों का बोध करते हुए रामराज्य का वर्णन करते है। तुलसी ने शासक के कर्तव्यों एवं दायित्वों का उल्लेख करते हुए कहा है–

मुखिया मुख सो चाहिए खान पान कौ एक।
पालइ पोषइ सकल अंग तुलसी सहित विवेक।।

तुलसी ने प्रतिपादित किया है कि शरीर में जिस तरह मुख और अन्य अंगों का समन्वय होता है उसी प्रकार राजा और प्रजा का समन्वय होना चाहिए।

सेवक कर पद नयन से, मुख सो साहिब होय।

तुलसीदास ने अपने काव्य में नर एवं नारायण का सुन्दर समन्वय किया है। रामचरितमानस में उन्होंने ''भय प्रकट कृपाला दीनदयाला कोशिल्या हितकारी।'' यह कहकर ब्रह्म को कौशल्या व दशरथ सुत के रूप में अवतरित दिखाया है। तुसली का मानना है कि वह निराकर परमात्मा अपने भक्तों के हित के लिए तथा असुर संहार करने हेतु पृथ्वी पर नर रूप में अवतीर्ण हुए है।

बिप्र धेनु, सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुण गोपार।।

तुलसी कहते है कि जब भक्त कष्ट में होता है तब परमात्मा अवतार लेकर भक्तों के कष्टों का हरण करता है।

तब–तब प्रभु धरि विविध सरीरा।
हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा।।

इस प्रकार तुलसी ने राम के रूप में नर और नारायण का अथवा मानव और ब्रह्म का सुन्दर समन्वय किया है।

तुलसी ने रामचरितमानस में लिखा हैः–

बरन धर्म नहीं आश्रम चारी।
श्रुति विरोधरत सब नर नारी।।

प्रजा के ऐसे घृमित व्यवहार से तुलसीदास अत्यंत दुःखी थे। इसी कारण उन्होंने एक आदर्श परिवार को सर्वश्रेष्ठ माना। उनका मानना है कि जब तक समाज के मानव में परस्पर प्रेम, ममता सदाचरण व उपकार की भावना नहीं होगी तब तक समाज सुख और आनन्द की अनुभूति नहीं कर सकता। इसलिए तुलसी ने रामचरितमानस में एक आदर्शवादी परिवार की अभिव्यक्ति करके पारिवारिक समन्वय की स्थापना की। उन्होंने परिवार के प्रत्येक सदस्य को आदर्शवादी विचारधारा से जोड़ा है। उनका राम स्वयं आदर्शवादी थे। उन्होंने अपने परिवार में आदर्श भावना का संचार किया था। तुलसी पारिवारिक, एवं नैतिक मूल्यों के पक्षधर पर्यादावादी कवि के रूप में जाने जाते है। तुलसीदास ने उन जीवन मूल्यों को रामचरितमानस में प्रस्तुत किया है जो भारतीय संस्कृति का पोष्ण करने वाले है। तुलसी के रामचरितमानस के पात्र परिवार के आदर्श को प्रस्तुत करते हैः–

सब नर करहिं परसपर प्रीति।
चलहिं स्वधर्म निरत स्रुति नीति।।

सब लोग आपस में मिलकर प्रेम से जीवन निर्वाह करते है। इस प्रकार तुलसी ने धर्म और अध्यात्म के क्षेत्र में नहीं अपितु पारिवारिक क्षेत्र में भी समन्वय का अनूठा प्रयास किया।

तुलसी ने अपने काव्य में अन्य क्षेत्र के साथ–साथ साहित्यिक क्षेत्र में भी समन्वय स्थापित किया। तुलसी ने अपने समय में प्रचलित सभी शैलियों में काव्य रचना की। वे भाषा के पंडित थे। संस्कृतभाषा पर उनका अधिकार था। फिर भी उन्होंने अपने काल में प्रचलित सभी भाषाओं में काव्य की रचना की। तुलसी ने रामचरितमानस एवं विनयपत्रिका की स्तुतियों में संस्कृत का प्रयोग करते हुए जन भाषा एवं संस्कृत का समन्वय किया। उन्होंने कृष्ण भक्त कवि सूरदास से प्रभावित होकर ब्रजभाषा में गीतावली, कवितावली विनयपत्रिका दोहावली आदि की रचना ब्रजभाषा में की। उन्होंने रामचरितमानस में अवधी तथा संस्कृत भाषा का समन्वय किया। उन्होंने कथा शैली एवं स्तोत्रों शैली का भी समन्वय अपने काव्य में किया है। भाषा सम्बन्धी तुलसी का सबसे प्रमुख उदाहरण है।

का भाषा का संस्कृत प्रेम चाहिए सांच।
काम जु आवै कामरी कालै करअ कुमाच।।

अंततः यह कहा जाता है कि तुलसी अपने काम के महान समन्वयवादी भक्त कवि व सुधारक थे। उन्होंने जीवन और जगत के हर क्षेत्र में समन्वय करते हुए एक आदर्श समाज की स्थापना करने का अनूठा प्रयास किया है। उन्होंने निषादराज की महर्षि वशिष्ठ के गले लगवाकर ब्राह्मण और शूद्र का समन्वय किया। शबरी के हाथों से राम को बेर खिलवाकर वर्ग व्यवस्था का समन्वय किया। इस प्रकार रामचरितमानस में हर दृष्टि से समन्वयवादी प्रवृत्ति को अपनाते हुए लोकनायक होने का परिचय दिया। उनके साहित्य का अवलोकन करने के पश्चात् यही कह सकते है कि उन्होंने मानव जीवन की समस्त गतिविधियों का अपने काव्य में समन्वय किया, एक सच्चा लोकनायक ही समन्वय कर सकता है। उनका सम्पूर्ण काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है और इस समन्वयवादी प्रवृति के कारण ही तुलसी के काव्य को इतनी लोकप्रियता प्राप्त हुई हैं तुलसी का काव्य आकर्षण का विषय रहा है। उनके कतित्व पर जो शोध कार्य हुआ, और जो ग्रंथ लिखे गये वे उनके महत्व को प्रमाणित करते है।

संदर्भ सूची–

1. रामचरितमानस–तुलसीदास, गीताप्रेस, गोरखपुर
2. विनयपत्रिका–तुलसीदास, हरीश विश्वविद्यालय प्रकाशन, आगरा
3. कवितावली–तुलसीदास
4. तुलसीदास एक विशेष अध्ययन, हरीश विश्वविद्यालय प्रकाशन आगरा
5. रचनाकार हजारी प्रसाद द्विवेद्वी एक विशेष अध्ययन, हरीश विश्वविद्यालय प्रकाशन आगरा।